शिक्षक होने के असल मायने

राकेश वैरवा
सहायक अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय
रेलवे स्टेशन, निवाई, टोंक, राजस्थान

प्रधानाध्यापक – पारसमल जैन
भोजन माता – लीला देवी
नामांकन – 31

लगभग 25 परिवारों की एक छोटी सी वैरवा ढाणी रेलवे स्टेशन के उस पार स्थित है गांव में कुछ कच्चे तो कुछ पक्के घर हैं। ग्रीष्मकालीन पुस्तकालय की याद करते हुए शिक्षक राकेश बताते हैं कि गर्मी की छुट्टियों में गांव में ही एक छोटा सा पुस्तकालय अपने घर के बाहर चबूतरे पर चला रखा है जहां सुबह–शाम के वक्त ढाणी के बच्चे और युवा आकर बैठते हैं और अपनी इच्छानुसार कहानी की पुस्तकें पढ़ना, चित्रों में रंग भरना और कहानी लिखने का कार्य करते हैं। चबूतरे पर बच्चों को बड़ी दिलचस्पी से कार्य करते हुए देखकर सामने से गुजरते ढाणी के लोगों का ध्यान इन चबूतरों की ओर जाते ही कुछ पल उन्हें वहां रूककर देखने को विवश कर देता है।

राकेश ने बताया कि आमतौर पर राजस्थान में भीषण गर्मी के कारण लगभग डेढ़ महीने बच्चों की छुट्टियां हो जाती हैं और गांव में उस तरह के मनोरंजन के साधन भी नहीं होते हैं। लाइट का अभाव रहता है अत बच्चे कड़ी धूप में पेड़ के नीचे अपने स्थानीय खेल खेलने और घर परिवार के कामों में ही अपना समय व्यतीत करते हैं। जैसा आज मैं अपने परिवेश में देखता हूं ठीक ऐसे ही मेरा भी बचपन बीता। मुझे लगता है कि एक शिक्षक होने के नाते मुझे बच्चों के लिए इन गर्मी की छुट्टियों में कुछ खास करना चाहिये और इसी के तहत अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के अनिल गुप्ता से मेरी मुलाकात हुई और उन्होंने मुझे इन छुट्टियों में एक पुस्तकालय संचालन हेतु प्रेरित किया। जब मैंने ये पुस्तकालय शुरू किया तो गांव के लोग उपहास में मुझसे कहते कि माटसाब गर्मी की छुट्टियों में तो थोड़ा आराम कर लिया करो। बच्चों को इस समय भी पढ़ाते रहते हो, पर जब बच्चे सुबह के वक्त पुस्तकालय से जुड़ने लगे और घर पर पुस्तकें पढ़ने लगे तो फिर इन अभिवावकों का यह उपहास प्रशंसा में बदल गया। अब उनका कहना होता कि माटसाब आपने ये बढ़िया काम किया। दिन भर कहां तो बच्चे इतनी शैतानी किया करते थे अब किताबें पढ़ते रहते हैं। आपस में अपनी–अपनी पढ़ी किताबों और चित्रों पर बातचीत करते हैं। हमारे दादा–दादी बड़े चाव से इन बच्चों की बातें सुनते रहते हैं। कुछ बुजुर्ग लोग भी जिन्हें पढ़ना नहीं आता बच्चों से कहानी सुनते हैं और किताब को उलट–पलट कर चित्र ही देखते रहते हैं।

शिक्षक राकेश ग्रीष्मकालीन पुस्तकालय के अनुभवों को विद्यालय में भी उसी रूप में अपनाने का प्रयास करते हैं। वे राजकीय प्राथमिक विद्यालय रेलवे स्टेशन निवाई में 2001 से नियुक्त हैं। स्थानीय शिक्षक होने के कारण विद्यालय के लगभग सभी बच्चे नियमित रूप से विद्यालय आते हैं।

जब भी कोई बच्चा अनुपस्थित रहता है तो वे घर जाकर सम्पर्क कर बच्चे के नहीं आने का कारण पता करते हैं। बच्चे भी उनके साथ बहुत आत्मीय व्यवहार रखते हैं। उनका कहना था कि वैसे तो प्राथमिक कक्षाओं के लिए दो शिक्षक होते हैं। एक शिक्षक के पास दो विषय पढ़ाने के लिए निर्धारित हैं, परन्तु मैं सभी विषयों में बच्चों के साथ काम करता हूं। गणित शिक्षण पर आज उनके द्वारा कक्षा 3 में कार्य किया गया। जिसमें सींक झाड़ू से छोटी–छोटी तीलियों को तोड़कर बच्चों ने दस–दस के बंडल बनाये थे और उन्हें धागे से बांधा था। ये सामग्री बच्चों की संख्या के अनुपात में पर्याप्त थी। बच्चों को घटाव की अवधारणा सिखाने में इसका उपयोग किया गया। इसके लिए पहले उन्होंने बोर्ड पर प्रक्रिया को गणित का एक सवाल करते हुए समझाया, जिसमें तीली ओर बंडल से उधार लेने की अवधारणा को बच्चों से अंतःक्रिया करते हुए समझाया। तीन उधार के और बाकी के अलग–अलग सवाल लेते हुए तीली बडंल की मदद से इसे बोर्ड पर समझाया गया। फिर एक–एक बच्चे को यह सामग्री दी गयी और बोर्ड पर लिखे सवाल को हल करने का अभ्यास दिया। लगभग सभी बच्चों ने सहजता से इसे हल किया। नीरज नाम के बच्चे को इस सवाल को करने में थोड़ी कठिनाई आयी अतः उसे बोर्ड पर बुलाकर एक और सवाल हल करवाया गया ताकि बच्चों ने जहां गलती की उसे ठीक करते हुए उसकी घटाव पर सही समझ बनाई जा सके। इसके बाद घटाव के कुछ अभ्यास कार्य बच्चों को दिये गये।

शिक्षक राकेश से मैंने सवाल पूछा कि आमतौर पर विद्यालयों में घटाव के सवाल के लिए बोर्ड पर ही अवधारणा को सिखाया जाता है इस सामग्री से कैसे बच्चों को मदद मिलती है? उनका कहना था कि ठोस चीजों से यदि अवधारणा पर कार्य की शुरुआत की जाती है तो यह बच्चों को अवधारणा को ठीक से समझने और मूर्त से अमूर्त की ओर ले जाने में काफी सहायक होती है। मैंने बच्चों को संख्याओं पर कार्य के दौरान, ठोस सामग्री को खूब काम में लिया। अक्सर बरसात के मौसम में गांव में काली मिट्टी आसानी से मिल जाती है। मैंने बच्चों से पचास–पचास मिट्टी की गोलियों को बनवाया और कक्षा में एक टोकरी में भर दिया। संख्या सिखाने के दौरान बच्चों को इन गोलियों की मदद से संख्या नाम, चीजों को गिनना और जोड़ और घटाव का अभ्यास करवाया। कक्षा 1 के बच्चे भी इसी प्रकार का ठोस चीजों से अभ्यास करते हैं। बच्चों की कापियां देखने में बच्चे संख्याओं के साथ ठोस चीजों का जुड़ाव लेते हुए अभ्यास करते हैं जिसमें गणितीय तर्क की ओर बढ़ने का बच्चों का प्रयास रहता है। जो आगे गणितीय अवधारणाओं पर समझ के साथ ही परिवेशीय गणित को सीखने में भी मदद करता है। चूंकि प्राथमिक विद्यालय में सीमित संसाधनों से ही कार्य करना होता है। अतः आसपास मौजूद सामग्री का शिक्षण में कैसे उपयोग हो, ये कक्षा–कक्षीय प्रक्रियाओं में और बेहतर सीखने में मदद करता है। राकेश का कहना है कि अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन के पुस्तकालय से मैं बच्चों के लिए नयी–नयी किताबें और सामग्री को लेकर आता हूं साथ ही नियमित तौर पर कुछ न कुछ पढ़ता रहता हूं ताकि शिक्षा में कहां क्या प्रयास हो रहे हैं उनसे अवगत रहूं। एक दिवसीय गणित की कार्यशालाओं में भी मुझे यह सीखने को मिला कि बच्चों के साथ कार्य करने हेतु आपको नित नये प्रयोग करते रहने चाहिये इससे शिक्षण में जीवंतता बनी रहती है।

प्राथमिक कक्षाओं में बच्चों का अंग्रेजी में स्तर अपेक्षाकृत कम होता है, आप इसे किस तरह देखते हैं? राकेश जी का कहना था कि बच्चों का स्तर कम नही होता दरअसल हमारे सीखने–सिखाने के तौर–तरीके आज भी रूढ़िवादी ही हैं। अपने प्रयासों का जिक्र करते हुए राकेश जी बताते हैं कि मैं बच्चों को बात ही बात में अंग्रेजी सीखने के लिए प्रेरित करता हूं। निर्देश अंग्रेजी में देता हूं। बच्चों से अग्रेजी में ही छोटे–छोटे वाक्यों में सवाल–जबाव करता हूं। रोजमर्रा इस तरह से संवाद करने से धीरे–धीरे बच्चे प्रश्नों की भाषा को समझकर टूटे–फूटे वाक्यों में उत्तर देने का प्रयास करते हैं। परिवेश में अपने आसपास दिखाई दे रही चीजों के बारे में अंग्रेजी में संवाद करने के खूब मौके होते हैं उनका शिक्षण में उपयोग करता हूं। राकेश जी ने कक्षा 4 व 5 के बच्चों से उनकी कक्षास्तर की पुस्तक से पढने का कार्य करवाया जिसमें अधिकांश बच्चे ठीक अंग्रेजी वाक्यों का उच्चारण कर पा रहे थे। राकेश का कहना था कि जब यहां के बच्चे उच्च प्राथमिक विद्यालय में पढ़ने जाते हैं तो वहां के शिक्षक मुझसे कहते हैं कि आपके विद्यालय से आये बच्चों का स्तर काफी अच्छा है। उनका ये कथन मेरे प्रयासों को थोड़ा सुकून भी देता है और अच्छा भी लगता है।

''राजकीय प्राथमिक विद्यालय रेलवे स्टेशन में विजिट के दौरान मैंने बच्चों का स्तर देखा जो शिक्षक के बेहतरीन प्रयासों को दिखाता है। हमारी वर्तमान शिक्षा में ऐसे कम अवसर हैं जब शिक्षक के अच्छे प्रयासों को सम्मान की नजर से देखा जाये। शिक्षक राकेश बच्चों के साथ बहुत मेहनत करते हैं जो हमारे विभाग और अन्य शिक्षकों के लिए गर्व की बात है।''

– सविता शर्मा, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, निवाई, टोंक

(शिक्षक राकेश की अनिल गुप्ता से हुई बातचीत पर आधारित